E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 9 | September 2026

वैदिक काल में स्त्रियाँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० सुधीर कुमार गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुदिष्टपुरी, रानीगंज, बलिया।

सारांश

वैदिक काल भारतीय इतिहास का वह दौर है जिसमें समाज, संस्कृति, ज्ञान परंपरा और जीवन-मूल्यों की नींव पड़ी। इस काल में स्त्री-स्थितियों को लेकर अनेक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। किसी भी देश अथवा समाज की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उस समाज अथवा देश में स्त्रियों की दशा कैसी है? इसी दृष्टि से भारतीय समाज में स्त्रियों को प्रारम्भ से ही गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसी प्रकार वैदिक कालीन समाज में स्त्रियों को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह सभी दृष्टियों से पुरूषों के समान थी, पुरूषों की भांति उनका भी उपनयन संस्कार होता था और वे ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश कर उच्चतम आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करती थी। इस काल में हमें अनेक ऐसी विदुषी स्त्रियों के उल्लेख मिलते है जिन्होने ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं का प्रणयन किया था। इनमें लोपामुद्रा, विष्वधारा, अपाला, द्योषा, तथा उर्वषी आदि के नाम विषेष उल्लेखनीय है। शिक्षा ज्ञान और विद्वता के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि याज्ञिक कार्यो में भी वे अग्रणी थी। उपनिषदों में भी अनेक विदुषी स्त्रियों के उल्लेख मिलते हैं। सामान्य धारणा है कि वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत उच्च थी, परंतु समाज में समय के साथ हुए परिवर्तनों ने उनके अधिकारों और भूमिकाओं को प्रभावित किया। यह शोध पत्र वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा, परिवार, सामाजिक प्रतिष्ठा, धार्मिक अधिकारों और आर्थिक भूमिकाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा उत्तरवैदिक काल में इन भूमिकाओं के परिवर्तनों की भी समीक्षा करता है।

कुंजीभूत शब्द – वैदिक काल, स्त्रियाँ, अधिकार, वैदिक समाज, परिवार, स्वतंत्रता, शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति।

परिचय-

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही नारी का स्थान सम्माननीय रहा है और कहा गया है कि-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।। मनुस्मृति

अर्थात जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहीं पर देवता रहते हैं और जहाँ स्त्रियों का सम्मान नहीं होता है, वहाँ सब कर्म निष्फल होते हैं। उन दिनों परिवार मातृसत्तात्मक था। किंतु कालान्तर में धीरे-धीरे सभी समाजों में सामाजिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक से पितृसत्तात्मक होती गई और नारियाँ समाज के हाशिए पर चली गईं। वैदिक सभ्यता और संस्कृति के प्रारम्भिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत सुदृढ़ थी। अर्धनारीश्वर की कल्पना स्त्री और पुरुष के समान

Published: 11 September 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i9.45900
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

अधिकारों तथा उनके संतुलित संबंधों का परिचायक है। वैदिक काल में परिवार के सभी कार्यों और भूमिकाओं में पत्नी को पति के समान अधिकार प्राप्त थे। नारियाँ शिक्षा ग्रहण करने के अलावा पति के साथ यज्ञ का सम्पादन भी करती थीं। ऋग्वेद काल में स्त्रियाँ उस समय की सर्वोच्च शिक्षा अर्थात् बृह्मज्ञान प्राप्त कर सकती थीं। वेदों में अनेक स्थलों पर रोमाला, घोषाल, सूर्या, अपाला, विलोमी, सावित्री, यमी, श्रद्धा, कामायनी, विश्वम्भरा, देवयानी आदि विदुषियों के नाम लिखे हुए मिलते हैं।

वैदिक काल (1500 ई.पू.-600 ई.पू.) भारतीय इतिहास का वह चरण है जिसे भारतीय सभ्यता की बौद्धिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक नींव कहा जाता है।

समाज का संगठन, विचारधारा, परिवार की संरचना, पुरोहित व्यवस्था, शिक्षा और आर्थिक गतिविधियाँ- सबकी प्रारम्भिक झलक वेदों और उनसे जुड़े साहित्य में मिलती है। भारत में स्त्री-एक सांस्कृतिक और सामाजिक इकाई के रूप में हमेशा विशिष्ट स्थान रखती रही है। परंतु यह स्थान स्थिर नहीं बल्कि परिवर्तनीय रहा है।

वैदिक काल में स्त्रियों का अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है।

1. यह भारतीय सभ्यता में स्त्री-अधिकारों के वास्तविक प्रारंभिक स्वरूप को दर्शाता है।
2. यह हमें बताती है कि इतिहास में स्त्रियों की स्थिति कैसे और क्यों बदलती गई।
3. आज के आधुनिक समाज में स्त्रीपुरुष समानता की विमर्श धारा के लिए यह महत्वपूर्ण स्रोत बन सकता है।

वैदिक ग्रन्थों और उपनिषदों में अनेक महिलाओं का उल्लेख के साथ उपनिषदों के सवाल-जवाब में भी गार्गी, लोपामुद्रा, घोषा, सुलभ, मैत्रीय आदि का उल्लेख मिलता है। वैदिक युग में महिलाओं की जो उन्नत दशा भारतीय महिलाओं की थी वह अन्य देशों में कभी नहीं रही। इसिलए वैदिक युग को भारतीय महिलाओं का स्वर्णिम युग कहा जाता है।

चारों वेद भारतीय साहित्य के धार्मिक ग्रंथ माने जाते हैं। वैदिक काल के लोग वेदों के माध्यम से ज्ञान और धर्म का पालन करते थे। इस काल के महत्वपूर्ण धार्मिक प्रथाओं में यज्ञ, हवन, और तप का पालन किया जाता था। इस समय की जीवनशैली और संस्कृति का गहरा संबंध वेदों में दर्शाया गया है। वैदिक काल भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है और हमारे पुराने इतिहास के बारे में अधिक जानने का माध्यम है। वैदिक युग में वेदों के अलावा उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्, भाष्य जैसे प्रमुख ग्रंथ सम्मिलित थे। वैदिक साहित्य ने धार्मिक और दार्शनिक विचारों को प्रमुखता दी और भारतीय संस्कृति को पुष्ट किया। वैदिक काल में आजीवन विवाह न करने वाली स्त्री को अमाजु/कुलिनी कहा गया है। गार्गी ने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया था।

साहित्य पुनरावलोकन-

ऋतु शुक्ला (2017) ने अपने शोध पत्र 'वैदिक काल में नारी अधिकार' में बताया कि वैदिक साहित्य विशेषकर वेद और उपनिषद में महिलाओं का उल्लेख, उनकी विद्वता, उनके धार्मिक ज्ञान और यज्ञ-कर्म में भाग लेने की स्वतंत्रता, स्पष्ट रूप से मिलता है। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था, वे वेद पढ़ती थीं, उपनयन संस्कार (वेदाध्ययन) होता था और वे सामाजिक, धार्मिक गतिविधियों में पुरुषों के समकक्ष भाग ले सकती थीं। नारी को धार्मिक, सामाजिक, धार्मिक-कर्मकाण्डों (जैसे-यज्ञ, पूजा आदि) में भाग देने का अधिकार था केवल पुरुष विशेषाधिकार नहीं रखते थे। वैदिक समाज में महिलाओं का सम्मान था, उन्हें 'देवी', 'विदुषी' आदि सम्मानित रूपों से स्वीकार किया जाता था तथा उनकी धार्मिक व बौद्धिक प्रतिभा को स्वीकार किया जाता था। लेख निष्कर्ष

निकालता है कि वैदिक काल पुरुष-प्रधान समाजों (जैसे- बाद के स्मृति-काल, मध्यकाल व आधुनिक काल) की तुलना में नारी के लिए अधिक स्वतंत्र व सम्मानजनक था।

संजय कुमार मिश्र (2018) ने अपने शोध पत्र 'वैदिक एवं वैदिकोत्तर काल में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन' वैदिक तथा वैदिकोत्तर काल में महिलाओं की सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक और पारिवारिक स्थिति की तुलना करते हुए उनके अधिकारों व भूमिकाओं में आए परिवर्तन का विश्लेषण किये है। उन्होंने ने बताया वैदिक युग को अपेक्षाकृत उदात्त और समानतापूर्ण माना गया है। महिलाएँ शिक्षित, स्वतंत्र, तथा परिवार व समाज दोनों में महत्वपूर्ण निर्णय-भूमिका निभाती थीं। विवाह अपेक्षाकृत स्वतंत्रता पर आधारित था तथा स्त्री को संपत्ति पर कुछ अधिकार प्राप्त थे। उत्तर वैदिक काल में धीरे-धीरे पितृसत्तात्मक संरचनाएँ मजबूत हुईं। स्त्रियों की शिक्षा में कमी, धार्मिक अनुष्ठानों से दूरी तथा सामाजिक नियंत्रण में वृद्धि देखी गई। स्त्री का मुख्य कार्य गृहस्थ जीवन और परिवार-पालन पर केंद्रित होता गया। स्त्री-धन जैसी व्यवस्थाएँ बनी रहीं, परंतु स्वावलंबन कम हुआ।

शिवांगी राव (2018) ने अपने शोध पत्र 'वैदिक काल में स्त्रियों की दशा' में यह विश्लेषण करने का प्रयास किया है कि वैदिक काल के दौरान (प्रारंभिक एवं उत्तर-वैदिक) स्त्रियों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक सभी दृष्टियों से स्थिति कैसी रही। वैदिक युग में नारी को केवल गृह निर्माता या पत्नी के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे शिक्षा, संपत्ति, परिवार-विरासत, विवाह, धार्मिक कर्तव्य आदि में अधिकार और सम्मान प्राप्त था। वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था, वे 'ब्राह्मवादिनी' बनकर वेद-वेदांग आदि का अध्ययन कर सकती थीं। यदि स्त्री अविवाहित रहती थी, तो उसे पैतृक सम्पत्ति में अधिकार था, वहीं विवाह के बाद भी कुछ स्त्रियों को आर्थिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त थे। वैदिक समाज में 'स्वयंवर' जैसी प्रथा थी जहाँ लड़की को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार था। बाल-विवाह जैसी प्रथा नहीं थी। यदि पति की मृत्यु हो जाती थी, तो विधवा स्त्री को पुनर्विवाह (पुनर्भूः) का अधिकार था। यह बताता है कि विधवाओं की दशा हमेशा दयनीय नहीं थी।

सुशील कुमार शर्मा (2020) ने अपने शोध पत्र 'वेदों में नारी की भूमिका' में यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि प्राचीन विशेषकर वैदिक भारत में नारी की सामाजिक, धार्मिक, बौद्धिक स्थिति कितनी सम्मानजनक और उच्च थी। वेदों द्वारा नारी को दिए गए दर्जे, अधिकार, कर्तव्यों तथा उनके सम्भावित सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान को उजागर किया गया है। वेदों में नारी को कई आदर सूचक नाम दिए गए जैसे- देवी, विदुषी, सरस्वती, उषा, इन्द्राणी आदि जो दर्शाते हैं कि समाज में नारी को केवल गृहिणी या पत्नी के रूप में नहीं, बल्कि सम्मानित, पूज्य और मर्मज्ञ स्वरूप में देखा जाता था। यदि वैदिक सामाजिक व्यवस्था में किसी नारी के गुण और कर्म क्षत्रिय, वैश्य आदि प्रकार के हों, तो नारी को उस जाति-व्यवस्था के अनुसार रक्षा, व्यापार, कृषि या अन्य सामाजिक-आर्थिक क्रियाओं में भाग लेने का अवसर था अर्थात् नारी की भूमिका सिर्फ पारिवारिक या धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी हो सकती थी।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. वैदिक साहित्य के आधार पर स्त्री की स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करना।
2. स्त्री की शिक्षा, अधिकार, धार्मिक कर्तव्य और आर्थिक भूमिका का अध्ययन।
3. स्त्री की स्थिति में परिवर्तन के कारणों का विश्लेषण।

शोध पद्धति-

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक तथ्य पर आधारित है इसके लिए विभिन्न शोध पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, तथा इंटरनेट आधारित सूचनाओं का अध्ययन किया गया हैं। यह पेपर मूल रूप से वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध पत्र में भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति-

शिक्षा का अधिकार

वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था और उन्हें उपनयन संस्कार का अधिकार भी प्राप्त होने के उल्लेख मिलते हैं। इस काल में कुछ स्त्रियों को 'ब्रह्मवादिनी' कहा गया, जो आजीवन अध्ययन एवं ज्ञानार्जन में संलग्न रहती थीं, जबकि 'सद्यःवधू' वे स्त्रियाँ थीं जो विवाह तक अध्ययन करती थीं। गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने दार्शनिक एवं बौद्धिक चर्चाओं में सक्रिय भाग लिया और पुरुष ऋषियों के साथ शास्त्रार्थ किया। ऋग्वेद में अनेक स्त्री ऋषियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने वैदिक ऋचाओं की रचना की। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक समाज में स्त्रियों को शिक्षा, ज्ञान और तर्क-विमर्श के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त थे।

सामाजिक स्थिति

वैदिक समाज में स्त्रियों को परिवार और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वे केवल घरेलू जीवन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि सामाजिक गतिविधियों में भी उनकी सहभागिता दिखाई देती है। सभा और समिति जैसी सामाजिक संस्थाओं में उनकी भागीदारी के उल्लेख मिलते हैं। विवाह के संबंध में भी स्त्री की इच्छा और सहमति को महत्व दिया जाता था तथा उसे अपने जीवनसाथी के चयन का अधिकार प्राप्त होने के संकेत मिलते हैं। वैदिक समाज में एक-पत्नी प्रथा सामान्य रूप से प्रचलित थी, जबकि बहुपत्नी प्रथा व्यापक नहीं थी। इस प्रकार सामाजिक स्तर पर स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत स्वतंत्र और सम्मानजनक थी।

धार्मिक अधिकार

वैदिक काल में स्त्रियों को धार्मिक जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानों में पति के साथ सक्रिय रूप से भाग लेती थीं और पति-पत्नी को यज्ञ का संयुक्त कर्ता माना जाता था। स्त्रियाँ वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर सकती थीं तथा कुछ विदुषी स्त्रियों ने स्वयं ऋचाओं की रचना भी की। ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ आत्मविद्या और दार्शनिक ज्ञान में विशेष रूप से दक्ष थीं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक धर्म-व्यवस्था में स्त्रियों की धार्मिक सहभागिता केवल औपचारिक नहीं, बल्कि ज्ञान और कर्मकांड दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण थी।

आर्थिक स्थिति

वैदिक काल में स्त्रियाँ परिवार की आर्थिक व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। वे पशुपालन, कृषि से संबंधित कार्यों, गृह-व्यवस्था तथा अन्य घरेलू आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से योगदान देती थीं। कुछ वैदिक प्रमाणों से उनके संपत्ति संबंधी अधिकारों के संकेत भी मिलते हैं। उनकी श्रमशक्ति परिवार की आर्थिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण आधार थी। इस प्रकार वैदिक स्त्री केवल परिवार की देखभाल करने वाली सदस्य नहीं थी, बल्कि वह परिवार की सामाजिक और आर्थिक संरचना में सक्रिय योगदान देने वाली महत्वपूर्ण इकाई थी।

उत्तरवैदिक काल में स्त्री की स्थिति में परिवर्तन-

वैदिक काल की अपेक्षा उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की सामाजिक, शैक्षिक एवं धार्मिक स्थिति में क्रमशः परिवर्तन दिखाई देता है। इस परिवर्तन के पीछे सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक संरचनाओं में आए व्यापक बदलाव महत्वपूर्ण रहे। जैसे-जैसे समाज कृषि-आधारित और अधिक स्थायी होता गया, भूमि, संपत्ति और वंश की निरंतरता का महत्व बढ़ा और इसके साथ पितृसत्तात्मक व्यवस्था भी अधिक सुदृढ़ होती गई। कृषि कार्य और संपत्ति से जुड़े अधिकारों में पुरुषों की भूमिका बढ़ने से परिवार और समाज में पुरुष प्रभुत्व मजबूत हुआ। इसके साथ युद्धों और राजनीतिक संघर्षों की बढ़ती भूमिका ने भी पुरुष-केंद्रित सामाजिक व्यवस्था को बल दिया। परिणामस्वरूप स्त्रियों की स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता पहले की अपेक्षा सीमित होने लगी।

पितृसत्ता का सुदृढ़ होना

उत्तरवैदिक काल में पितृसत्तात्मक व्यवस्था अधिक प्रभावशाली होती गई। कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था में भूमि, संपत्ति और वंश पर नियंत्रण ने पुरुष की सामाजिक भूमिका को अधिक महत्वपूर्ण बना दिया। युद्धों और राजनीतिक संघर्षों में पुरुषों की प्रमुख भागीदारी ने भी पुरुष प्रभुत्व को मजबूत किया। इसके परिणामस्वरूप परिवार और सामाजिक संस्थाओं में निर्णय लेने की शक्ति मुख्यतः पुरुषों के हाथों में केंद्रित होने लगी तथा स्त्री की भूमिका धीरे-धीरे अधिक घरेलू और पारिवारिक दायरे तक सीमित होती गई।

धर्मशास्त्रों का प्रभाव

धर्मशास्त्रीय परंपरा के विकसित होने के साथ स्त्रियों के आचरण और सामाजिक भूमिका को नियंत्रित करने वाले नियम अधिक प्रभावशाली हुए। विशेष रूप से स्मृति-परंपरा में स्त्री की स्वतंत्रता को सीमित करने वाली धारणाएँ दिखाई देती हैं। विवाह, शिक्षा, धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक निर्णयों में स्त्री की स्वतंत्र भूमिका पहले की अपेक्षा कम होने लगी। इससे स्त्री की स्वायत्तता प्रभावित हुई और उसका जीवन परिवार तथा पुरुष संरक्षण की अवधारणा से अधिक जुड़ता गया।

शिक्षा में कमी

उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा के अवसरों में भी क्रमशः कमी आई। उपनयन संस्कार और वैदिक अध्ययन की परंपरा, जो प्रारंभिक वैदिक काल में कुछ स्त्रियों के लिए उपलब्ध थी, धीरे-धीरे सीमित होती गई। इसके परिणामस्वरूप गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषी स्त्रियों की बौद्धिक परंपरा कमजोर पड़ती गई और स्त्री की विदुषी एवं स्वतंत्र चिंतक की छवि का स्थान अधिक पारिवारिक एवं घरेलू भूमिका ने लेना शुरू किया। इस प्रकार उत्तरवैदिक काल में सामाजिक संरचना के परिवर्तन के साथ स्त्री के अधिकारों और स्वतंत्रता में क्रमिक संकुचन दिखाई देता है।

प्रमुख वैदिक विदुषियाँ/ऋषि कन्याएँ

1. वाणी की देवी सरस्वती- ऋग्वेद में सरस्वती को वाणी की देवी कहा गया है जो उस समय की नारी की शास्त्र एवं कला के क्षेत्र में निपुणता का परिचायक है।
2. शतरूपा- ये स्वायम्भुव मनु की पत्नी थीं। ये चारों वेदों की प्रकाण्ड विदुषी थीं। जल प्रलय के बाद मनु और शतरूपा से ही दोबारा सृष्टि का आरम्भ हुआ। ये योगशास्त्र की भी प्रकांड विदुषी और साधिका थीं।
3. ब्रह्मवादिनी गार्गी- के पिता का नाम वचक्नु था, जिसके कारण इन्हें वाचक्नवी भी कहते हैं। गर्ग गोत्र में

उत्पन्न होने के कारण इन्हें गार्गी कहा जाता है। ये वेद शास्त्रों की महान विदुषी थीं। इन्होंने शास्त्रार्थ में अपने युग में महान विद्वान महर्षि याज्ञवल्क्य तक को पराजित कर दिया था।

4. विदुषी मैत्रेयी- महर्षि याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं। इन्होंने पति के सान्निध्य में बैठकर वेदों का गहन अध्ययन किया। पति परमेश्वर की उपाधि इन्हीं के कारण जग में प्रसिद्ध हुई, क्योंकि इन्होंने पति से ज्ञान प्राप्त किया था और फिर उस ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए कन्या गुरुकुल स्थापित किए।

5. विदुषी लोपामुद्रा- महर्षि अगस्त्य की धर्मपत्नी थीं। ये विदर्भ देश के राजा की बेटी थीं। राजकुल में जन्म लेकर भी ये 'सादा जीवन, उच्च विचार' की समर्थक थीं, तभी तो इनके पति ने इन्हें कहा था, तुष्टोअहमस्मि कल्याणि तव वृत्तेन शोभने, अर्थात् कल्याणी तुम्हारे सदाचार से मैं तुम पर बहुत संतुष्ट हूं। ये इतनी महान विदुषी थी कि एक बार इन्होंने अपने आश्रम में राम, सीता एवं लक्ष्मण को ज्ञान की बहुत सी बातों की शिक्षा दी थी।

6. ब्रह्मवादिनी घोषा- काक्षीवान् की कन्या थीं। इनको कुष्ठ हो गया था, लेकिन उसकी चिकित्सा के लिए इन्होंने वेद और आयुर्वेद का गहन अध्ययन किया और ये कुष्ठ रोगी होते हुए भी विदुषी और ब्रह्मवादिनी बन गईं। अश्विनी कुमार द्वय ने इनकी चिकित्सा की और ये अपने काल की विश्व सुन्दरी भी बनीं।

7. ब्रह्मवादिनी विश्ववारा- ये वेदों पर अनुसंधान करने वाली महान विदुषी थीं। ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल के द्वितीय अनुवाक के अठ्ठाइसवें सूक्त षड्ऋकों का सरल रूपांतरण इन्होंने ही किया था। अत्रि महर्षि के वंश में पैदा होने वाली इस विदुषी ने वेदज्ञान के बल पर ऋषि की पदवी प्राप्त की थी।

8. सन्ध्या- वेदों की प्रकाण्ड विदुषी थीं। इन्होंने महर्षि मेधातिथि को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। ये यज्ञ को सम्पन्न कराने वाली पहली महिला ऋत्विज थीं। उन्हीं के नाम पर प्रातः संध्या और सायं सन्ध्या का नामकरण हुआ।

9. विदुषी अरुन्धती- ब्रहर्षि वशिष्ठ की धर्मपत्नी थीं। ये भी वेदों की प्रकाण्ड विदुषी थीं। अपने ज्ञान के बल पर ही ये एकमात्र ऐसी विदुषी हैं, जिन्होंने सप्तर्षि मंडल में ऋषि पत्नी के रूप में गौरवशाली स्थान प्राप्त किया। महर्षि मेधातिथि के यज्ञ में ये बचपन से ही भाग लेती थीं और यज्ञ के बाद वैदिक विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किया करती थीं।

10. ब्रह्मवादिनी अपाला- ये अत्रि मुनि के वंश में ही उत्पन्न हुई थीं। अपाला को कुष्ठ रोग हो गया था, जिसके कारण इनके पति ने इन्हें घर से निकाल दिया था। ये अपने पिता के घर चली गईं और आयुर्वेद पर अनुसंधान करने लगीं। सोमरस की खोज इन्होंने ही की थी। इन्द्रदेव ने सोमरस इनसे प्राप्त कर इनके ठीक होने में चिकित्सकीय सहायता की। आयुर्वेद चिकित्सा से ये विश्वसुंदरी बन गईं और वेदों के अनुसंधान में संलग्न हो गईं। ऋग्वेद के अष्टम मंडल के 91वें सूक्त की 1 से 7 तक ऋचाएँ इन्होंने ही संकलित कीं।

11. विदुषी तपती- ये आदित्य की पुत्री और सावित्री की छोटी बहन थीं। देवलोक, दैत्यलोक, गंधर्वलोक और नागलोक में उन दिनों उनसे अधिक सुंदरी कोई और नहीं थी। वे वेदों की भी प्रकाण्ड विदुषी थीं। उनके रूप और गुणों से प्रभावित होकर ही अयोध्या के महाराजा संवरण ने उनसे विवाह किया था। तपती ने अपने पुत्र कुरु को स्वयं वेदों की शिक्षा दी, जिनके नाम पर कुरुकुल प्रतिष्ठित हुआ।

12. ब्रह्मवादिनी वाक्- अभृण ऋषि की कन्या थीं। ये प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी थीं। इन्होंने अन्न पर अनुसंधान किया और अपने युग में उर्वरक खेती के लिए वेदों के आधार पर नए-नए बीजों को खेती के लिए किसानों को

अनुसंधान से पैदा करके दिया।

13. ब्रह्मवादिनी रोमशा- ये बृहस्पति की पुत्री और भाव भव्य की धर्मपत्नी थीं। इनके सारे शरीर में रोमावली थी, इससे इनके पति इन्हें नहीं चाहते थे। लेकिन इन्होंने ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया, ऐसी बातों का प्रचार किया, जिससे नारी में शक्ति का विकास होता हो।

14. देवमाता अदिति- चारों वेदों की प्रकाण्ड विदुषी थीं। ये दक्ष प्रजापति की कन्या एवं महर्षि कश्यप की पत्नी थीं। इन्होंने अपने पुत्र इन्द्र को वेदों एवं शास्त्रों की इतनी अच्छी शिक्षा दी कि उस ज्ञान की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। यही कारण है कि इन्द्र अपने ज्ञान के बल पर तीनों लोकों का अधिपति बने। अदिति को अजर-अमर माना जाता है।

15. देवसम्राज्ञी शची- इन्द्र की पत्नी थीं, वे वेदों की प्रकांड विदुषी थीं। ऋग्वेद के कई सूक्तों पर शची ने अनुसंधान किया। शची देवी पतिव्रता स्त्रियों में श्रेष्ठ मानी जाती हैं। शची को इंद्राणी भी कहा जाता है। ये विदुषी के साथ-साथ महान नीतिवान भी थीं। इन्होंने अपने पति द्वारा खोया गया साम्राज्य एवं पद-प्रतिष्ठा ज्ञान के बल पर ही दोबारा प्राप्त किया।

16. शाकल्य देवी- ये महाराज अश्वपति की पत्नी थीं। एक बार अश्वपति महाराज ने ऋषियों से कहा कि मैं राष्ट्र में कन्याओं का भी निर्वाचन चाहता हूँ। देश में ऐसी कौन महान वेदों की विदुषी है जो देव कन्याओं को वेदों की शिक्षा प्रदान करे। ऋषियों ने बताया कि आपकी पत्नी से बढ़कर वेदों की विदुषी और कोई नहीं है। यह सुनकर राजा ने अपनी पत्नी शाकल्य देवी को वनवास दे दिया, ताकि वे वनों में रहकर कन्याओं के गुरुकुल और आश्रम स्थापित करें, जिसमें सभी कन्याएँ शिक्षा पाएँ। उन्होंने ऐसा ही किया।

17. विदुषी सुलभा- ये महाराज जनक के राज्य की परम विदुषी थीं। इन्होंने शास्त्रार्थ में राजा जनक को हराया एवं स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना की।

18. विदुषी उशिज- ममता के पुत्र दीर्घतमा ऋषि की धर्मपत्नी थीं। महर्षि काक्षीवान इन्हीं के सुपुत्र थे। इनके दूसरे पुत्र दीर्घश्रवा महान ऋषि थे। वेदों की शिक्षा इन्होंने ही अपने पुत्रों को प्रदान की थी। इन्होंने ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 116 से 121 तक के मंत्र पर अनुसंधान किया।

19. विदुषी प्रातिथेयी- महर्षि दधीचि की धर्मपत्नी थीं। ये विदर्भ देश के राजा की कन्या और लोपामुद्रा की बहिन थीं। इनका पुत्र पिप्पललाद बहुत बड़ा विद्वान हुआ है।

20. ममता दीर्घतमा- ये ऋषि की माता थी। ये बहुत बडी विदुषी एवं ब्रह्मज्ञानसम्पन्न थीं।

वैदिक कालोत्तर की विदुषियाँ-

1. विदुषी भामती- ये विद्वान वाचस्पति मिश्र की पत्नी थीं। ये वेदों की प्रकाण्ड विदुषी थीं।

2. विदुषी विद्योत्तमा- इनसे परास्त होकर पण्डितों ने एक मूर्ख को मौनी गुरु बताकर संकेत से शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। पण्डितों ने दो अंगुली और मुक्का आदि के अलग अर्थ बताकर विद्योत्तमा को परास्त घोषित करके मूर्ख से विवाह करने को विवश कर दिया। विद्योत्तमा ने पति से उष्ट्र को उट्र सुनकर उसे रात में ही घर से निकालकर दरवाजा बंद कर दिया। कुछ वर्ष बाद एक घनघोर रात्रि में पति ने पुकारा-"अनावृत्तकपाटं द्वारं देहि।" विद्योत्तमा ने द्वार खोलकर कहा, "अस्ति कश्चित् वाक् विशेषः।" पत्नी के उपरोक्त तीन शब्दों पर अस्ति से 'कुमार सम्भवम्' महाकाव्य, कश्चित् से 'मेघदूत' खण्डकाव्य और वाक्विशेषः से 'रघुवंश

महाकाव्य' की रचना कर डाली। इन तीनों कालजयी ग्रंथ के रचनाकार थे वही अतीत के मूर्ख, विश्व के सर्वश्रेष्ठ संस्कृत साहित्यकार अमर महाकवि कालिदास।

3. उभय भारती- मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती से आदि शंकराचार्य को शास्त्रार्थ करने में कोई कठिनाई नहीं थी। जब उभय भारती ने शंकराचार्य से कामशास्त्र पर प्रश्न किए तो शंकराचार्य ने उन्हें रोका नहीं बल्कि अपने अज्ञानता के लिए माफी माँगी और कुछ समय के लिए शास्त्रार्थ रोकने को कहा।

विश्लेषण-

वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा, धार्मिक कार्यों, बौद्धिक विमर्श और पारिवारिक निर्णयों में पुरुषों के समान कई अधिकार प्राप्त थे, हालांकि ये अधिकार समाज की सभी वर्गों की स्त्रियों को समान रूप से उपलब्ध नहीं थे। वैदिक साहित्य में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि विदुषी स्त्रियों का उल्लेख उनकी बौद्धिक एवं सामाजिक सक्रियता को दर्शाता है। किंतु उत्तरवैदिक काल में सामाजिक संरचना में आए परिवर्तनों के साथ स्त्रियों की स्वतंत्रता और अधिकारों में धीरे-धीरे कमी आने लगी तथा उनकी भूमिका मुख्यतः परिवार और गृहस्थ जीवन तक सीमित होती गई। वैदिक साहित्य स्त्री की गरिमा और स्वतंत्रता की अपेक्षाकृत सशक्त तस्वीर प्रस्तुत करता है, जबकि स्मृति-काल में उसके जीवन और आचरण पर अनेक सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिबंध लगाए गए। इस प्रकार वैदिक से उत्तरवैदिक और स्मृति-काल तक स्त्री की स्थिति में आए परिवर्तन भारतीय समाज में बढ़ते पितृसत्तात्मक प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।

निष्कर्ष-

वैदिक काल भारतीय समाज के इतिहास में स्त्रियों की प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य का स्वर्ण युग माना जा सकता है। वे शिक्षित, तर्कसंगत, धार्मिक रूप से सक्रिय और आर्थिक योगदान देने वाली थीं। यद्यपि समय के साथ सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कारणों से उनकी स्थिति में अवनति हुई, परंतु वैदिक काल की स्त्रियों का योगदान भारतीय सभ्यता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वैदिक काल भारतीय इतिहास का वह दौर है जिसमें स्त्री की सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक पहचान अत्यंत उज्ज्वल दिखाई देती है। वेदों और उपनिषदों के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि इस काल में स्त्री न केवल परिवार और समाज की संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी, बल्कि वह शिक्षा, दर्शन, यज्ञकर्म, राजनीतिक सहभागिता और आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय थी। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि स्त्री को ज्ञान और तर्क-वितर्क के स्तर पर पुरुषों के समान मंच प्राप्त था। स्त्री को उपनयन संस्कार, संपत्ति पर अधिकार, विवाह में सहमति, यज्ञों में सहभागिता और सभा–समिति में उपस्थिति जैसे अनेक अधिकार उपलब्ध थे। यह दर्शाता है कि वैदिक समाज स्त्री को 'अधिकारहीन' नहीं बल्कि 'साझेदार' के रूप में देखता था। हालाँकि उत्तर-वैदिक काल में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों, बढ़ती पितृसत्ता और धर्मशास्त्रीय कठोरताओं के कारण स्त्री की स्वतंत्रता क्रमशः सीमित होती गई, परंतु यह परिवर्तन वैदिक काल की मूल भावना को नकार नहीं सकता। वैदिक समाज की स्त्री स्वतंत्र, शिक्षित, विवेकशील, सक्षम और आत्मसम्मान से युक्त थी।

वैदिक काल भारतीय स्त्री के अधिकारों, सम्मान और बौद्धिक स्वतंत्रता का एक स्वर्णिम अध्याय था। आज के आधुनिक समाज में जब लैंगिक समानता और स्त्री-स्वतंत्रता पर व्यापक विमर्श चल रहा है, वैदिक स्त्रियों का आदर्श न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि एक प्रेरणास्रोत के रूप में भी अत्यंत मूल्यवान सिद्ध होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची –

1. गुप्ता, देवेन्द्र कुमार (2004), प्राचीन भारतीय समाज एंव अर्थव्यवस्था प्रकाशन, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेषन,दिल्ली
2. लर्नर, डेनियल (1958), द पासिंग अवे ऑफ ट्रेडिशनल सोसाइटी, फ्री प्रेस, पृ. 5
3. ट्यूमिन, एस.एम. (1953), सम प्रिंसिपल ऑफ स्ट्रेटिफिकेशन: ए क्रिटिकल एनालिसिस, अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, वाल्यूम 18, पृ. 387-394
4. सिंह, जे.पी. (1999), सामाजिक परिवर्तन स्वरूप एवं सिद्धान्त, हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 10-11
5. गुप्ता, दीपा (2011), वैदिक युगीन सामाजिक, आर्थिक एंव धार्मिक जीवन प्रकाशन, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
6. गुप्ता, दीपा (2017), वैदिक कालीन नारी की स्थिति , आई.जे.आर.
7. खुराना एवं चौहान (2020), भारतीय इतिहास में महिलाएं, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एजुकेशनल पब्लिशर, आगरा
8. राव, शिवांगी (2018), वैदिक काल में स्त्रियों की दशा, आर.ए.ए.
9. सिंह, सत्येन्द्र और शिवम् (2023), वैदिक कल में नारी एवं उसकी सामाजिक स्थिति, आई.जे.एच.एस.एस.आर.
10. शर्मा, सुशील, कुमार (2020), वेदों में नारी की भूमिका, साहित्य कुञ्ज, अंक: 149, फरवरी प्रथम
11. शुक्ला, ऋतु (2017), वैदिक काल में नारी अधिकार, आई.जे.एस.आर.टी.
12. मिश्र, संजय, कुमार (2018) वैदिक एवं वैदिकोत्तर काल में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन, आई.जे.ए.ई.आर.